'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

प्रकाशन तिथि- 30 सितंबर, 2014

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, क्नॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 17 ● अंक 21 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 30 सितंबर, 2014

न्यायिक आयोग से दलितों को मिलेगा अधिकार: उदित राज

नेतराम ठगेला

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की मध्य प्रदेश इकाई की ओर से गत् 21 सितम्बर 2014 को रविन्द्र भवन, भोपाल (मध्य प्रदेश) में डा. उदित राज, सांसद एवं अध्यक्ष, परिसंघ की अध्यक्षता में विशाल सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. उदित राज का भव्य नागरिक अभिनन्दन भी किया गया।

इससे पूर्व मध्य प्रदेश के अध्यक्ष श्री परमहंस प्रसाद एवं सभा संयोजक डॉ. बी. भारती (रजिस्ट्रार, भोज ओपन यूनिवर्सिटी) के काफी प्रयासों से उदित राज का महत्वपूर्ण समय मिल पाया था। इसलिए दोनों साथियों ने इसे अपनी प्रतिष्ठा बनाकर पूरे प्रदेश में खबरें भेजी। यह उनकी मेहनत का प्रयास था कि 21 की बजाय 20 सितम्बर को ही मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से परिसंघ के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भोपाल पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

गत् 21 सितम्बर को डॉ. उदित राज को रेलवे स्टेशन पर लेने के लिये बडी संख्या में परिसंघ के कार्यकर्ता पंहुचे और उन्होंने डा. उदित राज व उनके साथ गये परिसंघ के राष्ट्रीय महासचिव श्री नेतराम ठगेला को माला पहनाकर भव्य स्वागत किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अध्यक्ष डा. उदित राज, मुख्य अतिथि श्री लाल सिंह आर्य (सामान्य प्रशासन मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार), श्री फग्गन सिंह कुलस्ते (सांसद, पूर्व केन्द्रीय मंत्री), डॉ. चिन्तामणी मालवीया (सांसद), श्री इन्द्रेश गजभिये (अध्यक्ष, बाबा साहेब जन्मोत्सव समिति, महु एवं कैबिनेट मंत्री, मध्य प्रदेश), श्री नेतराम ठगेला (महासचिव, परिसंघ), श्री परमहंस प्रसाद (प्रदेश अध्यक्ष, परिसंघ), डॉ. बी. भारती आदि ने बाबा साहेब के चित्र के आगे मोमबत्ती जलाकर पुष्प अर्पित किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये डा. उदित राज ने कहा कि हर समाज की अपनी ताकत होती है। वैश्य की ताकत व्यवसाय, ब्राह्मण की ताकत शिक्षा व धर्म उसी प्रकार से हमारी ताकत सरकारी अधिकारी कर्मचारी है। आन्दोलन प्रारम्भ करने के समय 40 लाख सरकारी कर्मचारी-अधिकारी थे मगर आज हमारी ताकत घट गयी है, अब सरकारी कर्मचारी/अधिकारी 27 से 28 लाख रह गये हैं। सब कुछ निजी क्षेत्र में जा रहा है। 1991 में निजीकरण, भूमण्डलीकरण का दौर चल रहा था उस समय समाज की ताकत बचाने की बजाय बहुजन समाज पार्टी थू-थू रैली, सम्मान रैली कर रही थी। तब हम तो कहीं नहीं थे तो क्यों नहीं बचाई गयी हमारी नौकरी व अधिकार?

हमें सम्मान या संसाधन नौकरी से ही मिलते है। हम अपना पूरा ध्यान राजनीति में लगा दें तो क्या होगा। 800 से अधिक विधायक बन सकते है और इससे इनको ही फायदा होगा मगर नौकरी से लाखों परिवारो को फायदा हुआ है। हमने संविधान संशोधन करवाकर अपना आरक्षण बचाया है। लोकपाल में आरक्षण हमने लिया है। निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिये हम प्रयास कर रहे हैं, देख लेना यह होकर ही रहेगा। कार्य रिजल्ट ओरियेन्टेड होना चाहिये। उन्होंने अजाक्स के साथियों से आग्रह किया कि वे मध्य प्रदेश में अपना संगठन चला ले मगर यदि परिसंघ आरक्षण नहीं बचा पाता तो क्या मुख्यमंत्री आरक्षण दे पाते, नहीं? वे कहते मैं क्या करूं, केन्द्र सरकार का नियम तो यह कहता है। आईये राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे आन्दोलन में हिस्सा ले।

डॉ. उदित राज ने आगे कहा आज व्यापार में हम कहीं नहीं हैं, न्यायाधीश बनाने की प्रक्रिया तो और भी अजीब है। दुनिया में कहीं भी कोई भी अपने को नहीं चुनता है आज मैं सांसद हूं तो 23 लाख लोगों ने चुना है। क्या मैं अपने को खुद को सांसद बना सकता हूं? क्या माननीय मोदी स्वयं प्रधानमंत्री बन सकते हैं? हमें सांसद या अन्य पद जनता ने दिये हैं। हमारे संविधान ने भी न्यायाधीश चुनने का अधिकार राष्ट्रपति अर्थात सरकार को दिया है मगर 20 साल पहले कोर्ट ने जजमेंट के माध्यम से जजों को चुनने का अधिकार अपने पास ले लिया। तालियों के मध्य उन्होंने कहा कि यह हमारी सरकार है जिसने इस अन्याय को खत्म करके लोकसभा व राज्य सभा से न्यायाधीशों की नियुक्ति आयोग बनवाने का प्रस्ताव पास करवाया है। अब नहीं तो दो चार साल बाद हमारे भी उच्च न्यायपालिका में जज होंगे।

आरक्षण की मांग सिर्फ हमारे फायदे के लिये ही नहीं बल्कि देश के हित में है। अमेरिका में काले खरीदे व बेचे जाते थे तब अमेरिका विश्व शक्ति नहीं था। देश से प्रेम होने के कारण गोरे अब्राहम लिंकन ने वहां के दलितों (काले) को आजाद किया। उन्हें भी व्यवस्था का हिस्सा बनाया। बेशक लिंकन को गोरों ने ही गोली से मार दिया हो मगर उन्होंने अपने देशप्रेम के कारण अमेरिका को विश्व की शक्ति बना दिया। हम भी चाहते हैं कि हमें भागीदारी मिले जिससे भारत भी अमेरिका से भी ताकतवर बने। हमसे ज्यादा देशभक्त कौन होगा।

उन्होंने आगे कहा कि हम अपनी मांगें संविधान के दायरे में उठाते हैं। आप भी यही करे, कोई आपका अहित नहीं कर पायेगा। इस अवसर पर श्री फगन सिंह कुलस्ते, सांसद (पूर्व मंत्री, भारत सरकार ने कहा आपको कोई बेवजह सताता है तो हमारे पास आये, हम रास्ता खोजेंगे।

मुख्य अतिथि श्री लाल सिंह आर्य ने कहा कि हमने बाबा साहेब के जन्मस्थल के लिये कैबिनेट मंत्री स्तर का अध्यक्ष बनाया है। इसी के तहत हर वर्ष विशाल कार्यक्रम बाबा साहेब के जन्मस्थान पर करते हैं। इसी प्रकार से हमारी सरकार उज्जैन में संत रविदास जी का जन्मोत्सव मनाती है तथा भगवान बाल्मीकी जयन्ती का अवकाश दिया गया है। इनके अतिरिक्त बच्चों के पुस्तकों व अन्य सामान के लिये पैसे राज्य सरकार देती है। उन्होंने आगे बताया कि 10 जिलों के अधिकारी अनुसूचित समाज से हैं। डा. चिन्तामणी, सासंद ने कहा हमारे बच्चों को आज मीड डे खाने का लालच देकर उन्हें पढ़ाई से महरूम रखा जा रहा है। हमें जागृति आन्दोलन चलाकर माहौल बनाना होगा।

श्री नेतराम ठगेला, राष्ट्रीय महासचिव परिसंघ ने उपरोक्त समस्याओं को सुलझाने के लिये माननीय उदित राज के नेतृत्व में नवम्बर 2014 मे होने वाली रैली में बड़ी संख्या में भागीदारी निभाने की अपील करते हुये कहा कि आप हमारे कार्यक्रमों में भागीदारी करें। डा. उदित राज आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे भागीदारी दिलायेंगे। परमहंस प्रसाद ने सभी अतिथियों व प्रदेशभर से आये प्रतिनिधियों, इस कार्यक्रम के संयोजक डा. बी. लाल का परिसंघ के कार्यक्रम को विशाल बनाने के लिये धन्यवाद दिया। इस अवसर पर अन्यों के अलावा श्री इन्द्रेश गजभिये, मंत्री, श्री बी. भारती, श्री एस. एल. सूर्यवंशी (अजाक्स) आदि ने विचार रखे। अध्यक्ष के धन्यवाद के साथ सभा सम्पन्न हुई।

परिसंघ की विशाल रैली दिल्ली में

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज के आवाहन पर भागीदारी, पदोन्नति में आरक्षण एवं ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति के लिए आगामी नवंबर में संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत में रामलीला मैदान, नई दिल्ली में प्रस्तावित विशाल रैली के लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें। रैली की तारीख सुनिश्चित होने पर आपको सूचित किया जाएगा। उपरोक्त अधिकारों को प्राप्त करने के लिए तहसील, जिला एवं प्रदेश स्तर पर सभा/सम्मेलन करके तन, मन एवं धन से सहयोग कर रैली को ऐतिहासिक बनाएं।

विनोद कुमार, राष्ट्रीय महासचिव, मो.-9871237186,
ईमेल -dr.uditraj@gmail.com

हंस की स्त्री विषयक बहस (1993)

सीमा

यह बात सर्वविदित है कि 'हंस' के प्रकाशन वर्ष से ही संपादक राजेंद्र यादव प्रति वर्ष 31 जुलाई प्रेमचंद के जन्मदिन पर 'हंस' की वार्षिक गोष्ठी करते रहे। उसी क्रम में 31 जुलाई 1992 में 'हंस' ने 'दलित चेतना : विशिष्ट संदर्भ प्रेमचंद' विषय पर नई दिल्ली में वार्षिक गोष्ठी का आयोजन किया था। जिसकी चर्चा लंबे समय तक चलती रही और अंत में 'स्त्री दलित है या नहीं?' पर पर केंद्रित हो गई।

मार्च, 1993 में संपादक राजेंद्र यादव ने 'उमा भारती' का हवाला देते हुए 'स्त्री' व 'दलित' को एक ही श्रेणी में रखने के पक्ष में अपना संपादकीय 'तुम्हारे गले में यह किसकी आवाज है, उमा भारती?' लिखा। जिसके फलस्वरूप एक बहस छिड़ गई। राजेंद्र यादव 'दलित साहित्य' को व्यापक दायरे में देखते हैं। वे स्त्री को भी दलित मानते हैं। अपनी इस धारणा का श्रेय वे मनु महाराज व हिंदू धर्मग्रंथों को देते हैं। उनके अनुसार चूंकि, वर्ण व्यवस्था स्त्री और दलित के साथ लगभग समान व्यवहार करती है, इसलिए इन दोनों को एक श्रेणी में रखना चाहिए। वे अपने संपादकीय में लिाते हैं–

''... औरत और शूद्र को उसकी जगह बताना तो वर्णव्यवस्था को आता ही है सारी ट्रम्प तो उनके हाथों में हैं, आप कच्चे पत्तों से बराबरी के खेल में बने रहने का मुगलाता बनाए रहिए... भारतीय वर्णव्यवस्था में आप कहीं भी क्यों न हों, औरत को 'सेक्स' और 'शूद्र' को जाति बताकर चुटकियों में उसे जमीन दिखाई जा सकती है।''[1]

वे आगे लिखते हैं– ''वर्ण व्यवस्था न चुनाव का अधिकार देती है और न बराबरी का। शरीर धारण करते ही समाज में आपकी जगह तय है और इसे आप बदल नहीं सकते।''[2]

धार्मिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह सही है कि हिंदू समाज एक श्रेणीबद्ध समाज है जिसका आधार वर्ण व्यवस्था है। मनु ने वर्ण व्यवस्था को चार सोपानों में विभाजित किया है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। 'ब्रह्म' को जानने वाला 'ब्राह्मण', सभी की रक्षा करने वाला 'क्षत्रिय', व्यापार करने वाला 'वैश्य' और इन सभी की सेवा करने वाला 'शूद्र' कहलाया। देखने में तो यह विभाजन कर्म के आधार पर लग रहा है किंतु 'हंस' में प्रतिक्रिया देते हुए बी. एल. नैय्यर कहते हैं– 'वास्तव में मनुकृत विभाजन कर्म पर भी आधारित नहीं था। उनके अनुसार मनु ने स्वयं कहा है–

जातिमात्रोपजीवी वा कामं
स्याद ब्राह्मण ब्रुवः
धर्म प्रवक्ता नृपतेर्न तु शूद्रः
कथंचन।।
(मनु. अ. 8)

अर्थात्, धर्मोपदेश करने वाला ब्राह्मण बुद्धू हो तो हर्ज नहीं, परंतु (ज्ञानी होने पर भी) शूद्र को धर्मोपदेशक नियुक्त न करें।''[2]

इस तरह यह विभाजन कर्म पर आधारित तो नहीं लगता। वे आगे लिखते है– ''मनु ने आर्यों को आकाश तक ऊंचा उठाने और शूद्रों को रसातल में धकेल देने वाली व्यवस्था अपने विधान में प्रतिपादित की तथा कठोर से कठोर पाबंदिया शूद्र वर्ग पर लागू कर दी गई।''[3]

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित्र मानस की रचना 15वीं शताब्दी में की। उन्होंने भी अपनी इस कृति में साफ–साफ लिखा है–

पूजिए विप्र शील गुण हीना।
नहिं शूद्र, गुण ज्ञान प्रवीना।।
ढ़ोल, गंवार, शूद्र, पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।।
(रामचरित्र मानस)

यहां तुलसीदास जी ने स्त्री और शूद्र को एक ही पात में रखा है। दोनों ही ताड़न के अधिकारी हैं। लेकिन वहीं दूसरी ओर 'हंस' जून 1993 के अंक में बीच–बहस स्तंभ के अंतर्गत 'नीलम कुलश्रेष्ठ' तुलसीदास जी की चौपाई की अलग तरह से व्याख्या करती है। वे किसी आगरा के पंडित जी की व्याख्या को हवाला देते हुए कहती है–''तुलसीदास जी ने रामायण में स्थान–स्थान पर नारी को पूज्यनीय बताया है, तो वे कैसे उसे शूद्र के स्थान पर रख सकते हैं ? ... इस चौपाई को इस तरह पढ़ना चाहिए, ढ़ोल, गंवार, शुद्र, पशु नारी। सकल ताड़न के अधिकारी।''[4]

नीलम जी की इस व्याख्या के प्रतिक्रिया स्वरुप 'हसं' सितंबर 1993 के अंक में 'परमानंद अग्निपंथी' जी लिखते हैं कि क्या नीलम जी बताएंगी कि आखिर ये शूद्रों में नया विभाजन कब हो गया? गंवार शूद्र कौन से शूद्र हैं शहरों के या गांव के? क्या शहरों के शूद्रों के साथ जातीय भेदभाव नहीं हो रहा? और ये पशुनारी कौन सी नारी है आखिर वे कौन सी परिस्थितियां थी जिसने इसे पशु बना दिया?

वे लिखते हैं– ''यह ठेठ आर्य समाजीय व्याख्या की किस्म है जिसके तहत समय और परिस्थिति के अनुकूल प्रगतिशील तत्वों को धर्म में जोड़ा जाता है और इस तरह धर्म की अर्न्तवस्तु को अपटुडेट किया जाता है।''[5] देखा जा सकता है कि शूद्रों का शोषण किसी एक कालखंड में ही नहीं अनवरत काल से रहा है। उन्हें न शिक्षा का अधिकार था न ही संपत्ति रखने का। वे मात्र सेवक थे। वहीं डॉ. मीनाक्षी सखी स्त्री शोषण की जड़ें भी ब्राह्मणवादी विचारधारा के उदय में खोजती है। बकौल मीनाक्षी सखी ''स्त्री दास का उदयदास प्रथा के साथ ही होता है...स्त्री प्रथा और जाति प्रथा मूलतः धर्म आधारित होने के कारण आर्थिक राजनैतिक परिवर्तनों के दौर में भी बरकरार रहीं। भारत में लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व ब्राह्मणवादी विचारधारा का उदय हुआ है। वंश से राज्य तक राज्य व्यवस्था के विकास और वर्ग से जाति तक समाज व्यवस्था के विकास की प्रक्रिया सदियों तक चलती रही। .... राज्य संस्था के विकास के बाद धर्म की सांठगांठ से स्त्री और दलित जातियों के लिए दोहरे नीति–नियम स्थापित किए गए।''[6]

''ब्राह्मण ग्रंथों के योनिशुचिता और रक्तशुद्धता की अवधारणा स्थापित करने के लिए पतिव्रता धर्म इस प्रकार व्याख्यायित किया गया है 'पति चाहे शराबी, जुआरी, लम्पट, जाहिल, अपराधी क्यों न हो, परमेश्वर मानकर उसकी आज्ञा का पालन करना पतिव्रता स्त्री का धर्म है। ... पति से दूर रहने वाली स्त्री को श्रृंगार शोभा नहीं देता... शास्त्रों में विधवा स्त्री के सिर के बाल मुंडवाने, दांत उखाड़ने तथा नाक–कान काट देने का विधान है''7

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि कैसे ब्राह्मणवाद ने धार्मिक–सांस्कृतिक हथकंडे अपना कर भोली–भाली स्त्रियों को सदियों तक अमानवीय यातनाएं दी हैं। और सबसे बड़ी बात है कि वे इसे धर्म के साथ जोड़कर पूरी श्रद्धा के साथ यातनाएं सहती हैं। उनकी नजर में पति परमेश्वर है और उसका आदेश ही अंतिम है। सर्वसत्तावादी पुरुष ने मानसिकता का शोषण करके स्त्रियों को निकृष्ट दर्जे के श्रम और सेवा कार्य से बांधा है, स्त्री और शूद्रों में हीनता बोध पैदा करके बराबरी का उनका दावा जड़ से खत्म कर दिया है।

यहां राजेंद्र यादव जी के तर्क कि 'वर्णव्यवस्था स्त्री व दलित के साथ एक सा सुलूक करती है' से सहमत हुआ जा सकता है। जहां स्त्री व दलित के शोषण के बीज इस ब्राह्मणवादी वर्णव्यवस्था में ही दिखाई देते हैं। वहीं प्रभा खेतान स्त्री के लिए 'जाति' शब्द का अर्थ उस अर्थ में नहीं लेती जो वर्णव्यवस्था के लिए प्रयुक्त किया गया है। वे कहती हैं– 'स्त्री के लिए जाति शब्द का प्रयोग इस अर्थ में नहीं किया जा सकता जिस अर्थ में हम वर्णव्यवस्था की व्याख्या करते हैं। स्त्री एक कोटी है, ठीक उसी प्रकार जैसे पुरुष एक कोटी है, एक मानवीय इकाई।''8

इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का मत महत्वपूर्ण है वे लिखती हैं– ''स्त्री का अपना स्वतंत्र वर्ण नहीं होता, वह बनाया जाता है। यदि पंडितजन चाहे तो 'चमाार' कन्या का मंत्र श्लोक पढ़कर गंगाजल से नहलाकर शुद्ध कर ले... बिरादरी भोज ऐसा पारस है जो औरत को पति की जाति बख्शता है। सामाजिक शर्त यह भी है कि यदि पति उसको छोड़ता है, तो अपनी जाति भी छीन लेगा, वह दूसरी जगह जाएगी तो दूसरे की जाति पहन–ओढ़ लेगी और वर्तमान मालिक से पहचानी जाएगी।''9

यहां तुलनात्मक अध्ययन से देखा जा सकता है कि स्त्री का स्वयं कोई वर्ण नहीं होता। वह किसी वर्ण से बंधी नहीं होती। स्त्री का स्थायी कुछ नहीं होता क्योंकि वह चल संपत्ति है। वह विवाह संस्था के चलते जिस पुरुष से विवाह करती है उसी के वर्ण को धारण कर लेती है। यह नारी जीवन की विडंबना भी है और अस्तित्व संकट भी।

राजेंद्र यादव जी के अनुसार जो चीज स्त्री को दलित पक्ष में रखती है वह है उसकी देह, जो दंडनीय है। समाज व परिवार में उसे हर तरह की प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। यदि उसका ब्याह न हो तो वह दंडनीय है, संतान न हो तो वह दंडनीय है और कुछ शुभ–अशुभ हो तो वह दंडनीय है और यह सभी दंड इसलिए है कि उसने नारी देह में जन्म लिया है? वहीं दूसरी ओर शूद्र भी शूद्र जाति में जन्म लेने के कारण दंडनीय है। वे लिखते हैं– ''सही है कि शूद्रों की तरह औरत (अछूत) नहीं है वह हमारे बीच और हममें से एक है... मगर जो चीज उसे शूद्र के साथ रखती है वह है उसकी देह जो मूलतः अपवित्र है। ...पुरुष की ऊर्ध्वगामी आध्यात्मिक उड़ानों या सार्वभौमिक स्वतंत्रता को रेशमी धागों से बांधती है।''10

इस संदर्भ में नीलम कुलश्रेष्ठ की गहरी प्रतिक्रिया है वे लिखती है –''आपने यह कैसे समझ लिया कि स्त्री में आध्यात्मिक रूझान या स्वतंत्र जीने की इच्छा नहीं होती या इन पर पुरुषों का ही अधिकार है।''[11] यहां स्त्री व दलित को एक ही पलड़े में रखने के तर्क से सहमति कम ही दिखाई पड़ती है। यादव जी का यह तर्क एकांगी लगता है। क्या स्त्री का अस्तित्व केवल पुरुष को मोह बंधन में बांधना मात्र है? क्या वह एक स्वतंत्र मानवीय इकाई के रूप में उड़ना नहीं चाहती? आखिकर कब तक स्त्री ही जवाबदेही के कठघरे में खड़ी दिखाई देगी? वहीं दूसरी ओर मृदुला गर्ग औरतों को दलितों के साथ जोड़ने का सख्त विरोध करती है उनके अनुसार– ''आज स्त्री जाति में भी दो वर्ग है दलित और गैर–दलित।''[12] उनके अनुसार यह अभिजात पुरुष की साजिश है, जो स्त्री को दलित होने के भ्रम में डालकर उन्हें कमतर होने की कुंठा डालना चाहते हैं। वहीं प्रभा खेतान मृदुला गर्ग के इस स्त्री विभाजन पर प्रश्न चिह्न लगाती दिखाई देती है। वे कहती हैं –''स्त्री मुक्ति आंदोलन अपने आप स्त्री जाति की पूरी परिस्थितियों को समाहित करके चलना चाहता है। वह स्त्री जाति में दलित और गैर दलित जैसे विभाजन को नहीं स्वीकारता।''[13]

प्रभा खेतान के अनुसार– 'स्त्री दलित हैं भी और नहीं भी। वे कहती हैं–जहां एक ओर वह पुरुष सत्ता के विरोध में अभिव्यक्त होती है। वहीं कुछ कदमों के बाद उसी सत्ता के साथ चलने पर विवश हो जाती है। दरअसल वे 'स्त्री चेतना' को दलित कहती है। उनके अनुसार, चेतना तो बाद में आती है पहले तो सवाल स्त्री के अस्तित्व का है और वह अपने अस्तित्व की पहचान कर रही है। 'स्त्री चेतना' को वह दलित इस संदर्भ में बताती है क्योंकि स्त्री को अपनी गुलामी का एहसास खुद भी नहीं है। वे लिखती हैं– ''अपने मानसिक दोहन से वह इतनी अनभिज्ञ है कि प्रतिक्रिया को ही मुक्ति स्थिति का द्योतक मान बैठती है।'' वह स्त्री की समस्या का आधी दुनिया का संघर्ष मानती हैं क्योंकि प्रत्येक स्त्री के दुःख–दर्द, परेशानी, उलाहने एक जैसे होते हैं। स्त्री और दलित स्त्री की समानता के संदर्भ में वे कहती हैं– ''स्त्री दलित वर्ग की होते हुए भी केवल दलित वर्ग नहीं है एक दलित वर्ग के पुरुष में और उसकी स्थिति में जैविक भिन्नता है। ...का संघर्ष एक दलित वर्ग के पुरुष की तुलना में अधिक व्यापक इसलिए है कि आंदोलन की प्रक्रिया के दौरान स्त्री को दलित वर्ग के पुरुष के विरोध का भी सामना करना पड़ता है।''[14]

यहां दलित स्त्री के तिहरे शोषण के संदर्भ में बात की जा रही है। मनीषा जी के अनुसार–''औरत' की कोई जाति नहीं होती' वे लिखते हैं– ''वह केवल औरत है मर्द के इस्तेमाल का सामान होती है और केवल 'जनमांग' होती है। जब आप किसी और औरत को 'यूज' कर रहे होते हैं, तो उसकी जाति को नहीं खंगालने जाते। दरअसल जननांगों को कोई जातियों में नहीं बांट सकता।''[15]

व्यवहारिक तौर से देखा जाए तो यह सही भी है आज 'मेट्रो सिटीज' में देखें या गांव देहात में औरतों के शोषण की खबर आए दिन अखबारों, टेलीविजन आदि पर आती रहती है। वह परिवार में प्रताड़ित है। यदि नौकरी करती है, तो वहां भी उसे मानसिक व शारीरिक शोषण सहना पड़ता है। आए दिन बलात्कार की खबरें सुनने को मिलती है। क्या बलात्कार भी किसी की जाति जानकर किए जाते होंगे। किसी भी पुरुष के लिए औरत सबसे पहले औरत है। इस संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं– ''क्या कोई स्त्री छोटी जाति से संबंधित होती है, तभी पुरुष वासना की शिकार होती है? प्रमुखतः तो वह अपने स्त्री होने के कारण मर्दों के हमले झेलती है।''[16] वहीं मनीषा लिखती हैं– ''बलात्कारी देह की तलाश में रहता है–जाति या धर्म की नहीं।''[17]

सभी मतों का विश्लेषण करने से यही लगता है कि स्त्री को दलित कहना ठीक नहीं होगा। उसकी खुद की समस्याएं हैं और पृष्ठभूमि भी। यह सही है कि स्त्री चाहें 'ब्राह्मणी' हो या 'दलित' सभी इस वर्चस्ववादी पुरुष समाज में शोषित है, पीड़ित है, पर शोषण की जड़ों को गहराई में जाकर समझने की जरूरत है। इस संदर्भ में डॉ. विमल कीर्ति कहती हैं– ''स्त्री का दलितपन स्त्री पुरुष संबंधों में है और दलित समाज की गुलामी का संबंध सामाजिक संबंधों में है यानी हिंदू धर्म में है ... (इसलिए) स्त्री का दलितपन या दलित स्त्री का दलितपन भौतिक विकास, शिक्षा तथा आर्थिक विकास से खत्म नहीं होगा। इसके लिए आपको हिंदुत्व के खिलाफ भी लड़ना होगा।''[18]

इस भारतीय समाज की क्रूर सच्चाई भी है और नारी जीवन की विडंबना भी। शोषण चक्र में सदियों से पिसती नारी भी कब इस व्यवस्था का हिस्सा बन जाती है और वह भी मालिक पुरुष की भांति ही अन्य स्त्रियों खासकर दलित स्त्रियों का मानसिक व श्रमिक शोषण करती है। इस पितृसत्तात्मक पुरुष वर्चस्ववादी भारतीय समाज में दोनों का शोषण तय है। एक और जहां गैर दलित स्त्री अपने 'स्त्री होने' व दलित जाति में जन्म लेने के कारण सामाजिक भेदभाव व प्रताड़ना झेलते हुए दोहरे शोषण का शिकार होती है और यदि वह भूमिहीन व अत्यंत गरीब है तो उसका तिहरा शोषण भी तय है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सभी स्त्रियों को दलित कहना न्यायोचित नहीं है।

(साभार : सम्यक भारत)

केजरीवाल दिल्ली की जनता को जवाब दें कि सरकार के 49 दिन अनुसूचित जाति के पैसे के गबन के मामले की फाइल क्यों दबाई ? - भाजपा

नई दिल्ली, 18 सितंबर : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय एवं सांसद डॉ. उदित राज ने कहा है कि कांग्रेस व आम आदमी पार्टी दोनों में भ्रष्टाचारी तालमेल है और यही विगत 25 दिसंबर को इन दोनों पार्टियों में हुये गठबंधन का आधार था। समय-समय पर ऐसे समाचार आते रहे कि दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के पुत्र और सांसद श्री संदीप दीक्षित के आम आदमी पार्टी नेता और पूर्व मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल के बीच घनिष्ठ संबंध है। डॉ. उदित राज ने कहा कि देश में कांग्रेस और अब आम आदमी पार्टी दलितों का मसीहा बनने का दावा करती रही है पर इस प्रकरण ने दलित समाज के सामने इन दोनों को बेनकाब कर दिया है। श्री सतीश उपाध्याय ने कहा आज हमारे समक्ष कामनवेल्थ गेम्स की तैयारी के दौरान अनुसूचित जाति विकास फंड के दुरूपयोग और फिर उसकी फाइल के दिल्ली सरकार से गायब हो जाने एवं इस सब पर श्री अरविंद केजरीवाल सरकार की चुप्पी दर्शाता है कि श्रीमती दीक्षित और श्री केजरीवाल के बीच सांठगांठ थी।

भाजपा नेताओं ने कहा है कि कॉमनवेल्थ गेम्स की तैयारियों के दौरान 2010 की शुरुआत में तत्कालीन दिल्ली की कांग्रेस सरकार द्वारा अनुसूचित जाति विकास फंड का पैसा कॉमनवेल्थ गेम्स पर खर्च कर दिये जाने का मामल सामने आया था, पर तब कांग्रेस की दिल्ली एवं केंद्र दोनों की सरकारों की मिलीभगत से यह पैसे का दुरूपयोग दब गया और आज तक देश और दिल्ली के जनता विशेषकर अनुसूचित जाति के लोगों को यह भी पता नहीं लगा कि वह पैसा खर्च कहां हुआ और क्या उसकी वापसी गेम्स के बाद अनुसूचित जाति फंड से आई। यहां यह सर्वविदित है कि दिल्ली में विगत चार-पांच वर्ष से अनुसूचित अथवा पिछड़ी जातियों के कल्याण के कार्य पैसे की कमी के कारण बाधित है।

उन्होंने कहा है कि पूर्व मुख्यमंत्री अपने शासनकाल में लगातार कहते रहे कि जब भी हमारे सामने श्रीमती शीला दीक्षित सरकार के भ्रष्टाचार को काई ठोस मामला सामने आयेगा तो हम उन पर तुरंत कार्यवाही करेंगे, पर उनकी कथनी और करनी में हमेशा से फर्क था और आज हम दिल्ली की जनता के समक्ष श्री केजरीवाल और श्रीमती दीक्षित सरकार के बीच सांठगांठ का सबूत रख रहे हैं। श्री केजरीवाल 25 दिसंबर, 2013 को सत्ता में आये और 30 दिसंबर, 2013 को केंद्रीय गृह मंत्रालय के सचिव ने दिल्ली सरकार से एससी/एसटी फंड घोटाले पर रिपोर्ट मांगी। इस आशय के पत्र में स्पष्ट कहा गया कि गृह मंत्रालय और केंद्रीय समाज कल्याण मंत्रालय दोनों लगातार तीन वर्ष से संबंधित फाइले मांग रहे हैं पर तत्कालीन शीला दीक्षित सरकार ने कोई जवाब नहीं दिया।

श्री केजरीवाल जो बार-बार श्रीमती शीला दीक्षित सरकार के भ्रष्टाचार पर कार्यवाही की बात करते थे, 30 दिसंबर के बाद 45 दिन तक सत्ता में रहे और दिल्ली के अनुसूचित जाति के लोगों के कल्याण के पैसे के दुरूपयोग और गबन के इस व्यापक भ्रष्टाचार पर चुप्पी साधे बैठे रहे। श्री केजरीवाल यदि चाहते तो अकेला यह मामला श्रीमती शीला दीक्षित और उनके मंत्रिमंडल पर भ्रष्टाचार का मुकदमा स्थापित करने के लिए काफी था। श्री उपाध्याय ने कहा कि दिल्ली के उपराज्यपाल श्री नजीब जंग की यह जिम्मेदारी है कि विगत् 21 अगस्त को केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा दिल्ली के मुख्य सचिव को इस संदर्भ में भेजे गए पत्र के जवाब में अब दिल्ली प्रशासन स्पष्ट बताये कि इस फंड की फाइल कहां है और यह पैसा दिल्ली में कहां विकास पर लगा, क्या दिल्ली सरकार ने गेम्स के बाद उपयोग किया पैसा अनुसूचित जाति कल्याण फंड में वापस किया? उपराज्यपाल एवं दिल्ली प्रशासन केंद्र सरकार एवं दिल्ली की जनता को यह भी बताये कि अपने 49 दिनों के शासन में श्री अरविंद केजरीवाल सरकार ने इस फाइल को केंद्र सरकार के सुपुर्द क्यों नहीं किया?

श्री उपाध्याय ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल शीघ्र ही इस संदर्भ में केंद्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह से मिलेगा और मांग करेगा कि पैसे के इस दुरूपयोग और गबन पर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी सरकारों की चुप्पी के कारणों की सीबीआई जांच कराई जाये।

दलित राजनीति

अर्जुन श्री

दलित राजनीति के सन्दर्भ में लोक सभा के चुनाव नतीजे अच्छे एवं बुरे दोनों एक साथ रहे। अच्छे इस सन्दर्भ में कि दलितों के मुखर प्रवक्ता डॉ0 उदित राज का संसद में पहुंचना और बुरे इस सन्दर्भ में कि दलितों की नामधारी पार्टी बसपा का उत्तर प्रदेश से पूर्ण सफाया।

उत्तर प्रदेश में बसपा की करारी पराजय ने और निरन्तर गिरते उसके वोट प्रतिशत ने दलितों के बीच, बसपा की प्रासांगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। भविष्य में दलित राजनीति की दशा और दिशा क्या होगी इस पर दलित चिन्तकों को चिन्तन करने की जरूरत है।

दलित राजनीति के पैरोकार कही जाने वाली बसपा ने सन् 2007 के उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में अप्रत्याशित जीत दर्ज कर अपनी सरकार बनाई। और कु0 मायावती जी ने अपने पिछले कार्यकालों की तुलना में इस बार सरकार को बड़े ही अप्रत्याशित ढंग से चलाया भी। जिससे दलितों की कही जाने वाली पार्टी बसपा से विश्वास उठ गया। इसका प्रमाण बसपा के गिरते वोट प्रतिशत से मिलता है। यथा-सन् 2009 के लोक सभा चुनाव में बसपा को 27.42 प्रतिशत वोट मिला। यहां पर बसपा का वोट प्रतिशत 2007 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों की तुलना में 3.1 प्रतिशत घटा। सन् 2012 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में बसपा को 25.91 प्रतिशत वोट मिला यहां पर बसपा का वोट प्रतिशत 4.52 प्रतिशत 2007 की तुलना में घटा। सन् 2014 के लोक सभा के चुनावों में बसपा को 19 प्रतिशत वोट मिला। यहां पर बसपा का वोट प्रतिशत 2007 की तुलना में 11.43 प्रतिशत घटा, और दुखद स्थिति यह रही कि उसे लोक सभा की एक भी सीट नहीं मिली। दलितों का प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी बसपा का संसद में प्रतिनिधित्व जीरो हो गया। लेकिन क्या दलितों का प्रतिनिधित्व भी संसद में जीरो हो गया।

बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर द्वारा दलितों को दिलाई गयी, आरक्षण रूपी व्यवस्था के चलते संसद में दलितों का 15 प्रतिशत और आदिवासियों का 7.5 प्रतिशत प्रतिनिधित्व, गांधी के बन्दरों का अनुकरण करने वालों का बना रहेगा। या फिर उससे कुछ ज्यादा पूर्व सपा सांसद यशवीर धोबी की तरह, जिन्होंने संसद में आरक्षण बिल की प्रतियों को ही फाड़ने का कुकर्म किया। लेकिन ऐसे प्रतिनिधियों से क्या कुछ दलितों का भला होने वाला है। दो टूक शब्दों में बिल्कुल नहीं।

दलितों को एक ऐसा नेता और प्रतिनिधि चाहिए जो उनके हितों की रक्षा कर सके और उन पर होने वाले शोषण उत्पीड़न एवं अत्याचारों को रोक सके।

जैसा मैंने पूर्व में कहा कि इस बार लोक सभा में दलितों के मान-सम्मान और अधिकारों की लम्बे समय से लड़ाई लड़ते चले आ रहे डॉ0 उदित राज का संसद में पहुंचना निश्चित ही दलितों का 'अच्छे दिन आने' जैसा है।

डॉ0 उदित राज ने सन् 1997 में अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों के अखिल भारतीय परिसंघ की स्थापना कर दलितों के लिए संघर्ष शुरू किया। भारत सरकार ने उस दौरान पांच आरक्षण विरोधी आदेश जारी किये थे। डॉ0 उदित राज ने आरक्षण बचाने हेतु 11 दिसम्बर 2000 को रामलीला मैदान, दिल्ली में इतनी विशाल रैली की थी जिसे आजाद भारत की दस बड़ी रैलियों में से एक माना गया था। करीब-करीब इस रैली में 10 लाख दलितों का जमावड़ा देखने को मिला था। (हिन्दुस्तान समाचार की रिपोर्ट)। और जिसके प्रभाव के चलते सरकार को संविधान में 81वां, 82वां और 85वां संशोधन करना पड़ा।

इन संविधान संशोधनों पर एक नजर :-

81वां-संविधान (81वां संशोधन) अधिनियम 2000 : इस अधिनियम के द्वारा अनुच्छेद 16 में संशोधन करके यह प्रावधान किया गया कि यदि आरक्षित स्थानों में किसी वर्ष कुछ स्थान बगैर भरे रह जाते हैं तो ऐसी रिक्तियों को सरकार एक अलग श्रेणी में रखकर अगले वर्षों में भर सकती है। और ऐसा करते समय इन्हें 50 प्रतिशत की आरक्षण सीमा में नहीं गिना जायेगा।

82वां-संविधान (82वां संशोधन) अधिनियम 2000 : अनुच्छेद 335 में एक परंतुक जोड़कर यह अधिनियम स्पष्ट करता है कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये संघ और राज्यों की सेवाओं में आरक्षित स्थानों में किन्ही रिक्तताओं को पदोन्नति द्वारा भरते समय मूल्यांकन के मानक और न्यूनतम अंकों में कमी की जा सकती है।

85वां-संविधान (85वां संशोधन) अधिनियम 2001 : इस अधिनियम के द्वारा अनुच्छेद 16 में संशोधन करके यह स्पष्ट किया गया कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों की सरकारी सेवाओं में प्रोन्नति करते समय यह ध्यान रखना होगा कि प्रोन्नत पदाधिकारियों को पारिमाणिक वरिष्ठता भी मिलेगी।

डॉ. उदित राज ने बगैर संसद में पहुंचे संवैधानिक संशोधन कराकर दलितों का छीना जा रहा आरक्षण बचा कर अपनी नेतृत्व क्षमता का लोहा मनवा दिया। यही वजह रही कि इस बार के लोक सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने उनकी काबिलियत को समझते हुए डॉ0 उदित राज को अपनी पार्टी में ले आई और उन्हें उत्तर-पश्चिम दिल्ली से जितवा कर लोक सभा में भेजा। और कहना न होगा कि उदित राज के भाजपा में शामिल होने का एक प्रभाव यह भी पड़ा कि बहुत सी अति-दलित जातियों का जो वोट बसपा को जाता था वह इस बार भारतीय जनता पार्टी को गया। जिसके चलते भारतीय जनता पार्टी को उत्तर प्रदेश में 80 में से 73 सीटें प्राप्त हुई। जो अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है।

कहीं न कहीं भारतीय जनता पार्टी को उत्तर प्रदेश में मिलने वाली कामयाबी में डॉ0 उदित राज का भी योगदान है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि डॉ0 उदित राज जी की काबिलियत और समझ को देखते हुए उन्हें मंत्रिमण्डल में स्थान देकर उनकी योग्यताओं और क्षमताओं का राष्ट्र निर्माण में भरपूर उपयोग किया जाये बगैर किसी राजनीति के।

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशि:

पांच वर्ष : 600 रुपए

एक वर्ष : 150 रुपए

बहुजन के जाति नायक

बद्रीनारायण

आज दलितों के राजनीतिक विमर्श का आधार, उनकी स्वयं की संस्कृति, जिसमें उनके जाति नायक और इन नायकों से जुड़ी सामूहिक स्मृतियां शामिल हैं, बन गया है। ये नायक और उनके आसपास बुने गए मिथक, दलितों की एक नई दासताभाव-मुक्त संस्कृति के विकास की दिशा में एक कदम है। यह नई संस्कृति उस ब्राह्मणवादी संहिता का विलोम है, जो उन्हें ऊंची जातियों द्वारा स्वीकृत प्राचीन ग्रंथों के हवाले से रोज-बरोज अपमानित करती है।

ऐसे नायकों की तलाश, जो दलितों को एक नई पहचान दे सकें और उनका इस्तेमाल कर राजनीतिक सत्ता हासिल करने की कोशिश, निस्संदेह, दलित संस्कृति में एक क्रांतिकारी और मुक्तिदायी परिवर्तन है। गिहार जाति एक शिल्पी समुदाय है, जिसका परंपरागत व्यवसाय पत्थरों से मूर्ति गढ़ना है। वह अपने जातिगत इतिहास में महाराणा प्रताप व पृथ्वीराज चौहान (मध्यकालीन भारत के दो प्रसिद्ध राजपूत राजा) को शामिल कर रही है।

नीची जातियों के स्वयं को उच्च जातियों के नायकों से जोड़ने का एक और उदाहरण खटीकों का है। खटीक एक प्रमुख दलित जाति है, जिसके सदस्य उत्तर प्रदेश के लगभग सभी क्षेत्रों में फैले हुए हैं। खटीकों के रहवास के क्षेत्र, जिसे 'खटीकाना' कहा जाता है, उत्तर प्रदेश के सभी नगरों, कस्बों और गांवों में हैं। खटीकों को मेवाफरोश भी कहा जाता है, यद्यपि वे स्वयं को सोनकर कहलाना पसंद करते हैं, क्योंकि यह अधिक सम्मानीय लगता है। वर्तमान सामाजिक-आर्थिक वातावरण की मांग को पूरा करने के लिए शहरी खटीकों ने मौखिक परंपरा में अपने जाति नायकों को खोजने का प्रयास किया। अपनी जाति के उदय के संबंध में गहन अनुसंधान करने के बाद वे स्वयं को महात्मा डरबलनाथ और संत किरोड़ीमल से जोड़ने में सफल हो गए। ये दोनों संत ऊंची जातियों के थे और इनका जिक्र हिंदू धार्मिक ग्रंथों में मिलता है।

कानपुर के यतींद्र सोनकर इस समुदाय के गिने-चुने शिक्षित लोगों में से एक हैं। उन्होंने कड़ी मेहनत और गहन अनुसंधान के बाद अपनी जाति की वंशावली तैयार की है। उन्होंने इस वंशावली को अपने समुदाय में लोकप्रिय बनाने के लिए कई नाटक, कहानियां और उपन्यास भी लिखे हैं। इससे इस जाति के सदस्यों में आत्मसम्मान की भावना जागी है और वे अपनी इस नई पहचान कर गर्वित महसूस करते हैं उन्होंने इन नायकों की जयंतियां भी मनाना शुरु कर दी है और इन अवसरों का उपयोग वे अपनी जाति की महिमा का वर्णन करने के लिए करते हैं।

हिन्दू जातिगत पदानुक्रम में भंगी सबसे नीचे की सीढ़ी पर खड़े हैं। चूंकि इस समुदाय के अधिकांश सदस्य साफ-सफाई का काम करते हैं, इसलिए उन्हें अत्यंत अपवित्र जाति माना जाता है। अलग-अलग राज्यों में उन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है। उदाहरणार्थ, पंजाब में वे चूहड़ा कहलाते हैं जबकि उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान में उन्हें भंगी, मेहतर, झरमाली, हालाखोर, राउत, हेला, डोम, डोम्हर, बसोर आदि नामों से पहचाना जाता है।

पंजाब में जिन चूहड़ों ने सिख धर्म अपना लिया है वे मजहबी सिख व रंगरेटा कहलाते हैं। उत्तर प्रदेश में भंगियों ने स्वयं को रामायण के लेखक वाल्मीकि से जोड़ना शुरू कर दिया है। वाल्मीकि को ऊंची जातियां अत्यंत श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। भंगी स्वयं को वाल्मीकि कहने लगे हैं और जोर-शोर से वाल्मीकि जयंती भी मनाते हैं। वाल्मीकि जयंती किस दिन होनी चाहिए, यह उन्होंने स्वयं तय कर लिया है।

पासियों ने स्वयं को परशुराम के साथ जोड़ने के अलावा, मध्यकाल में अपने कई जाति नायकों की खोज व अविष्कार कर लिया है। उनका दावा है कि इन नायकों ने दश के इतिहास व स्वाधीनता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिकाएं अदा की थीं। इन जाति नायकों का इस्तेमाल वे अपनी जाति पर गर्व करने और उसकी महिमा का गुणगान करने के लिए कर रहे हैं। लखनऊ, बहराइच, बाराबंकी, जौनपुर और इलाहाबाद के पासियों में बिजली महाराज की गाथा बहुत लोकप्रिय है। बहराइच में सुखदेव पासी नामक एक अन्य पासी चरित्र काफी लोकप्रिय है। दालदेव महाराज की जीवनगाथा रायबरेली, जौनपुर और इलाहाबाद के पास एक-दूसरे को सुनते-सुनाते हैं। कौशांबी और इलाहाबाद में बालीदीन की किवदंती लोकप्रिय है तो प्रतापगढ़, सुल्तानपुर और इलाहाबाद में बीरा पासी की दंतकथा इस जाति में गर्व का संचार करती है। अवध के इलाके में दालदेव पासी और उनके भाई बलदेव और काकोरन की कहानी प्रचलित है। ऐसा बताया जाता है कि ये तीनों भाई रायबरेली जिले के रहवासी थे।

चमार समुदाय इस तथ्य पर बहुत गर्वित महसूस करता है कि संत रविदास उनकी जाति के थे। संत रविदास, भक्तिकाल के सबसे लोकप्रिय व्यक्तित्वों में से एक हैं और वे सभी दलित जातियों के नायक हैं। यद्यपि चमार, जातिगत पदानुक्रम में काफी नीचे हैं तथापि वे मानते हैं कि संत रविदास केवल उनकी जाति के नायक हैं। यह जाति राजनीतिक दृष्टि से काफी जागरूक है, क्योंकि इसके सदस्य स्वयं को आम्बेडकर से जोड़ते हैं, जो महाराष्ट्र की महार जाति के थे। महाराष्ट्र के महार, उत्तर प्रदेश के चमारों के समकक्ष माने जाते हैं। जिन अन्य नायकों से चमार स्वयं को जोड़ते हैं उनमें संत कबीर और गौतम बुद्ध शामिल हैं (नाथ 2000:3)।

धानुक, समाज के हाशिए पर जी रही एक अन्य छोटी-सी अछूत जाति है, जिसने अपनी जातिगत पहचान को मजबूती देने के लिए अपने नायक की तलाश में अपनी जाति की मौखिक परंपराओं को खंगाला। धानुकों को उनका नायक मिल गया। वे हैं पन्नाधाई जो चित्तौड़ के महाराजा राणासांगा के महल में काम करती थीं और महाराजा के उत्तराधिकारी कुंवर उदय सिंह की देखभाल की जिम्मेदारी संभालती थी। ऐसा बताया जाता है कि उदय सिंह की जान बचाने के लिए पन्नाधाई ने अपने इकलौते पुत्र चंदन को कुर्बान कर दिया और इस तरह, चित्तौड़, अपने शत्रुओं के हाथों में जाने से बच गया। पन्नाधाई इस पूरे समुदाय की जाति नायक बन चुकी है। इस जाति की बस्तियां मुख्यतः कानपुर, इटावा, मैनपुरी, एटा और फीरोजाबाद में पाई जाती है। इसके सदस्य पन्नाधाई की स्मृति में हर साल कार्यक्रम व विभिन्न

गतिविधियां आयोजित करते हैं (नाथ 2000:4)।

एक अन्य स्त्रोत, जिसमें से दलित समुदायों ने अपने नायक खोज निकाले हैं वह है लोककथाएं। ये अधिकतर प्रेम कथाएं होती हैं, जिनके नायकों की ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका का महिमामंडन किया जाता है। ऐसी ही एक कहानी का नायक है सोभानायक बंजारा, जो उत्तरी बिहार और नेपाल से लगे इलाके में रहने वाले बंजारा जाति के लोगों में प्रचलित एक कहानी का केंद्रीय पात्र है। उत्तर प्रदेश के गोंडा और बहराइच में रहने वाले बंजारे भी सोभानायक को अपना नायक मानते हैं। इस मध्यकालीन प्रेम कथा में नायक अपने समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ व्यवसाय करने दूर-दूर के स्थानों पर जाता है। उसकी राह में कई कठिनाईयां आती हैं परंतु वह उन सब पर विजय प्राप्त करते हुए अंततः अपने विरोधियों को परास्त करता है और उसका अपनी प्रेमिका से मिलन होता है।

मुसहर (एक अर्ध-घुमंतू समुदाय जो चूहे खाकर जीवित रहता है), बिहार के मिथिला क्षेत्र में रहते हैं। इनके बीच दीना-भदरी की कथा अत्यंत लोकप्रिय है। दीना और भदरी दो वीर भाई हैं जो सामाजिक स्तर पर संघर्ष करने के अलावा, मध्यकाल में उच्च जातियों की कई सेनाओं के दांत खट्टे कर देते हैं। लोककथाओं के दो अन्य नायकों देवसी और सवारी को भी मुसहर अपने पूर्वज मानते हैं। ये दोनों अलग-अलग क्षेत्रों में लोकप्रिय हैं। उत्तर प्रदेश के पिपरी और मिर्जापुर क्षेत्र में रहने वाले मुसहर, स्वयं को कोल जनजाति, जिसे चेरू के नाम से जाना जाता है, की एक शाखा मानते हैं। उनकी मान्यता है कि देवसी नामक प्रसिद्ध चरित्र के वंशज हैं। बिहार के गया और मगध क्षेत्र में सावरी का मिथक, मुसहरों को सावरी या सेवरी नाम के एक प्राचीन समुदाय से जोड़ते हैं, जो इतिहास के अंधकार में गुम हो गया है। इन तीनों मिथकों और उनसे जुड़े जाति नायकों का गीतों और कथाओं के जरिए प्रचार किया जाता है। बिहार के तीन अन्य गाथागीत नायक, जिनसे दुसाध जाति स्वयं को जोड़ती है वे हैं चूहड़मल, सलहेश व कुंवर विजयमल। दुसाध, मेलों और उत्सवों में गाए जाने वाले गीतों के माध्यम से अपने इन नायकों की स्मृति को जीवित रखते हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश में इन नायकों की स्मृति को जीवित रखते हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश में इन नायकों की मूर्तियां भी लगाई गई हैं और इनके नाम से जुड़े सामाजिक-राजनीतिक संगठनों का गठन भी हुआ है।

विभिन्न दलित समुदायों के जाति नायकों में से केवल कुछ ही हैं जो दलितों की अलग पहचान का प्रतीक बनने का माद्दा रखते हैं। और ये संपूर्ण दलित समुदाय के नायक बन गए हैं। इनके जरिए दलित समुदाय स्वयं को गर्वित महसूस करता है और उसके आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। जाति व सांस्कृतिक नायकों के अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश के दलितों ने राष्ट्रीय आंदोलन से भी अपने कई नायक ढूंढ निकाले हैं और इनका इस्तेमाल दलितों के राजनीतिक एकीकरण के लिए किया जा रहा है।

यह महत्वपूर्ण है कि दलित मौखिक परंपरा में कुंवर सिंह, तात्याटोपे और नाना साहेब जैसे कुलीन राष्ट्रवादी नायकों के लिए कोई स्थान नहीं है। इस परंपरा में जिक्र है चेतराम जाटव, बल्लू मेहतर, बांके चमार, वीरा पासी, झलकारी बाई, उदादेवी, उनके पति मक्का पासी, अवंतीबाई लोधी, महावीरी देवी, मातादीन भंगी व उदैया चमार। ये सभी वे शहीद हैं, जिनका जन्म भारतीय समाज के निचले तबके में हुआ था। दलितों का दावा है कि उदादेवी और उनके पति मक्का पासी पूरे विश्व के इतिहास में एकमात्र विवाहित दंपत्ति हैं, जिन्होंने अपने देश की खातिर 1857 की क्रांति के दौरान, लखनऊ के सिकंदराबाद में अपनी जानें न्योछावर कर दी थी। दलितों का कहना है कि केवल पासियों को ही नहीं वरन् पूरे देश को स्वाधीन भारत के निर्माण में उनके योगदान पर गर्व करना चाहिए। दलित यह भी दावा करते हैं कि 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ हुए विद्रोह की शुरुआत मातादीन भंगी ने की थी। कुलीन राष्ट्रवादी मंगल पांडे, जिन्होंने बैरकपुर कैंट में अंग्रेजों के विरुद्ध सबसे पहले विद्रोह का झंडा उठाया था, को ऐसा करने की प्रेरणा मातादीन भंगी ने ही दी थी। इन नायकों की कथाओं का प्रचार किया जाता है, उन पर लोकगीत रचे जाते हैं, उनकी मूर्तियां स्थापित की जाती हैं और उनकी स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए उत्सवों और मेलों का आयोजन किया जाता है।

ये नायक अपने-अपने इलाकों की लोकपरंपरा का हिस्सा बन गए हैं। उदाहरणार्थ उदैया चमार की कथा, अलीगढ़ क्षेत्र में लोकप्रिय है। मुजफ्फरनगर के आस-पास के इलाके में महावीरी देवी वह दलित नायिका हैं, जो मौखिक परंपरा का हिस्सा बन गई है। झलकारी बाई बुंदेलखंड व मध्य उत्तर प्रदेश में लोकप्रिय हैं। वीरांगना उदादेवीकी कथा उत्तर प्रदेश के मध्य क्षेत्र में प्रचलित है। मध्यप्रदेश से जुड़े इलाके अर्थात् उत्तर प्रदेश का बघेलखंड, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश से जुड़े इलाके अर्थात् उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में फैला बुंदेलखंड, दोनों राज्यों के बीच स्थित चित्रकूट का क्षेत्र और इलाहाबाद के आसपास के मध्यप्रदेश से जुड़े क्षेत्रों में दलित समुदायों में अवन्ती बाई लोधी का मिथक, लोककथाओं का अभिन्न हिस्सा बन गया है और बहुत मकबूल है।

सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी कहानियों में से बसपा ने मायावती की छवि को चमकाने के लिए कुछ नायिकाओं जैसे झलकारी बाई, उदादेवी, महावीरी देवी, अवन्तीबाई लोधी इत्यादि को चुना है और इन नायिकाओं को संपूर्ण दलित समुदाय की नायिकाओं के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में बसपा के शासनकाल में इन नायिकाओं की मूर्तियां प्रदेश में कई जगहों पर स्थापित की गई है। झांसी में झलकारी बाई की मूर्ति, रानी लक्ष्मीबाई के किले के ठीक सामने स्थापित की गई है। इन नायिकाओं की स्मृति में कई मेले और उत्सव आयोजित किए जाते हैं और उनके नाम पर अनेक जाति संगठनों की स्थापना की गई है।

अपनी जाति की महिमा का वर्णन करते हुए निषाद, एकलव्य की कथा सुनाते हैं, जो प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत का एक चरित्र है। निषादों के एक अन्य मिथकीय नायक हैं कालू धीवर। वे मानते हैं कालू धीवर महान ऋषि नारद के गुरू थे। नारद, ब्राह्मण थे जबकि कालू धीवर मल्लाह थे। उनके पिता का नाम कोन्दव और माता का श्यामादेवी था। निषाद मानते हैं कि भगवान विष्णु ने नारद से कहा कि वे पृथ्वी पर जाएं और किसी मानव को अपना गुरु बनाएं। नारद ने भगवान से पूछा कि वे किसी मनुष्य को अपना गुरु कैसे बना सकते हैं क्योंकि धरती पर रहने वाले सभी मनुष्य देवताओं की आराधना करते हैं। इस पर भगवान विष्णु ने उनसे कहा कि धरती पर जिस भी मानव से उनकी सबसे पहले भेंट हो, वे उसे अपना गुरु बना लें। जब नारद मुनि धरती पर अवतरित हुए तो उनकी मुलाकात सबसे पहले कालू धीवर से हुई, जो गंगा नदी में मछली पकड़ने के लिए अपना जाल डाल रहा था। भगवान

शेष पृष्ठ 5 पर...

बाबा साहेब की तरह हमारी लड़ाई भी न्याय के लिए : उदित राज

विश्राम मीणा

13 सितंबर, 2014, जोधपुर : अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ का सम्मेलन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उदित राज के नागरिक अभिनंदन के साथ आज एम. बी. एम. इंजीनियरिंग कॉलेज के सभागार में संपन्न हुआ। डॉ. उदित राज ने बाबा साहेब के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्जवलन से सम्मेलन का शुभारंभ किया गया। डॉ. उदित राज को साफा बांध व 21 किलों की माला पहना कर मीणा व भील समाज की ओर से अभिनंदन किया। सम्मलेन को बतौर मुख्य अतिथि डॉ. उदित राज ने संबोधित करते हुए कहा कि हमारी लड़ाई बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की तरह सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय के लिए है। इसके लिए सभी दलित, आदिवासियों और पिछड़े लोग संगठित होकर तैयार रहे। उन्होंने यह भी कहा कि जनप्रतिनिधि पार्टी से बंधा रहता है लेकिन अधिकारी-कर्मचारी वर्ग किसी से बंधा नहीं है। डॉ. राज ने कहा कि केवल भाषण देने से समाज का भला नहीं हो सकता, इसके लिए लोगों के बीच जाकर समस्याओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है। राजस्थान के मिना और मीणा का विवाद समतामंच व मनुवादियों की साजिश है जबकि मिना और मीणा एक ही जाति है।

पूर्व सांसद एवं केंद्रीय ऊन विकास बोर्ड के अध्यक्ष जसवंत सिंह बिश्नोई ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मुझे आश्चर्य हो रहा है कि डॉ. उदित राज के स्वागत के लिए मारवाड़ में हजारों अधिकारी-कर्मचारी पलक-पावड़े बिछाये इस सम्मेलन में शामिल हुए हैं जो इनके प्यार और संघर्ष का प्रतीक है।

परिसंघ के प्रदेश महासचिव विश्राम मीणा ने सम्मेलन की महत्ता बताई और पदोन्नति में आरक्षण के साथ निजी क्षेत्र, उच्च न्यायपालिका, सेना में आरक्षण, सरकारी विभागों में ठेका पद्धति पर पूर्ण रोक, रिक्त बैकलॉग की भर्ती, निकाय व निगमों में सफाईकर्मियों को समयबद्ध पदोन्नति, आरक्षण कानून, अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रावासों में सामान्य वर्ग के छात्रों के प्रवेश पर रोक और दलित-आदिवासियों पर जुल्म व अत्याचारों की रोकथाम के लिए दलित थानों की स्थापना आदि मांगों पर प्रकाश डाला।

सम्मेलन को विशिष्ठ अतिथि विधायक सूर्याकांत व्यास, कैलाश भंसाली, भाजपा जिलाध्यक्ष देवेंद्र जोशी, राष्ट्रीय जनजाति आयोग के पूर्व निदेशक डॉ. जी. एस. सोमावत, आयकर आयुक्त ओ. पी. मीणा, सा. नि. विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता एम. एम. फुलवारिया, भू-जल विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियंता हंस राज भट्ट, सा. नि. विभाग मंत्रालय के विशेषाधिकारी बी. एल. भाटी, सहकारी विभाग के उप निदेशक सोहन लखानी, काजरी के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राज सिंह, जयनारायण व्यास वि.वि. के प्रोफेसर डॉ. सोहनलाल मीणा, डॉ. एम. के. भास्कर, दूरसंचार के अधीक्षण अभियंता देवीलाल मीणा, विद्युत वितरण निगम के अधिशासी अभियंता पुखराज गर्ग, पूर्व आर. ए. एस. अधिकारी पी. सी. राठौड़, रेलवे के स. वित्त प्रबंधक श्याम सिंह राठौड़, जयपुर से आदिवासी नेता श्रीनारायण केमला, कृषि मंडी सुमेरपुर के चेयरमैन एन. आर. मीणा, कुम्भकार महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लूणचंद सिनवाडिया, परिसंघ के प्रदेश संयोजक मूलाराम खोरवाल, उद्योग प्रकोष्ठ से बुधाराम मारू ने संबोधित किया। सम्मेलन में राजस्थान के 14 जिलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बाड़मेर से सेठ पदम गौसाई, लीलाराम चौहान, बाबूलाल मीणा, पाली से जिलाध्यक्ष मोहनलाल रासू, महासचिव सोहनलाल भाटी, चुरू से नन्दलाल बोध, कोटा से पंचमराम, दौसा से देवेंद्र मीणा, जैसलमेर से बी. आर. गाडी, जालौर से चिमनाराम मीणा अपने साथियों के साथ शामिल हुए।

सम्मेलन को सफल बनाने में नृसिंह काला, मुकेश मीणा, रामप्रकाश मीणा, मुन्नाराम सिवाल, सोमाराम पंवार, डीकाराम परिहार, धन्नाराम अरटवाल, छगनलाल मारू, कोजाराम सर्वा, कैलाश मीणा, कमलेश मीणा, बुद्धराम मीणा, गंगाराम मीणा, लेखराज मीणा, अमरचंद मौर्य, रमेशचंद्र खींची, डॉ. वीरेंद्र बाल्मीकि, विजयराम राजोरिया, मलखान मीणा, बाबूलाल मोसलपुरी, राजेंद्र बंशीवाल, महेंद्र नागौरी, चन्द्रशेखर मीणा, छात्र नेता देवी लाल महलाना, लौकेश मीणा आदि ने सहयोग दिया। प्र. महासचिव विश्राम मीणा ने स्वागत भाषण दिया। मंच संचालन सम्मेलन संयोजक किस्तूर राम बारूपाल ने किया, जिलाध्यक्ष एम. आर. डांगी के अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

सायंकाल 5 बजे नागोरी गेट, जोधपुर के खटीक कलाल समाज की ओर से डॉ. उदित राज का जोर-शोर से स्वागत किया और उद्योगपति मनोहरलाल सांवरिया ने परिसंघ की राष्ट्रीय रैली के लिए एक लाख का चेक भेंट किया। सबरी वाटिका में आदिवासी भील समाज के लोगों ने भी डॉ. उदित राज का स्वागत किया।

14 सितंबर, 2014 को दिल्ली के अंबेडकर भवन में हुए नसोसवायएफ की राष्ट्रीय चिंतन बैठक में देश के उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, महराष्ट्र, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़, पंजाब, तमिलनाडु राज्य के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस बैठक में निजी क्षेत्र में आरक्षण की मांग को लेकर आगामी नवंबर में संसद के शीतकालीन सत्र में दिल्ली में प्रस्तावित रैली की तैयारी के बारे में चिंतन किया गया और नसोसवायएफ के राष्ट्रीय अधिवेशन की भी घोषणा की गई। इस बैठक में कोयल विश्वास को पश्चिम बंगाल के राज्य प्रभारी पद पर नियुक्त किया गया। बैठक को राष्ट्रीय समन्वयक डी. हर्षवर्धन ने भी सम्बोधित किया।

शेष पृष्ठ4 का ...

बहुजन के जाति नायक

विष्णु के आदेश के कारण नारद, कालू धीवर को अपना गुरू स्वीकार करने के लिए मजबूर थे, परंतु उन्हें इसमें संदेह था कि वे अपने इस गुरू से कोई भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। जब उन्होंने अपने इस संदेह से भगवान विष्णु को अवगत कराया तो भगवान ने उनसे कहा कि अपने गुरू से ज्ञान प्राप्त करना उनका कर्त्तव्य है और अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो उन्हें किसी महिला के गर्भ से 84 बार पुनर्जन्म लेना होगा। यह सुनकर नारद धरती पर वापस आए और कालू धीवर को अपने गुरू के रूप में स्वीकार कर लिया। इसलिए निषाद गर्व से दावा करते हैं कि भले ही सारे पृथ्वीवासियों के गुरू ब्राह्मण हों परंतु ब्राह्मणों का गुरू एक निषाद है।

अन्य धर्मों के विकास में अपने समुदाय की भूमिका पर भी निषाद गर्व महसूस करते हैं। अपने समुदाय के सदस्यों की वीरता और साहस का वर्णन करने के लिए वे हिम्मतराय धीवर के मिथक का इस्तेमाल करते हैं, जिन्होंने सिख धर्म की रक्षा की खातिर अपनी जान न्योछावर कर दी थी। फूलनदेवी, रानी रसमणी व अवन्तीबाई लोधी तीन अन्य नायिकाएं हैं जो निषादों की पौराणिकी का हिस्सा बन चुकी है। निषादों की महिमा का वर्णन करने वाली कथाओं को मुख्यतः 'निषाद वंशावली' नामक एक पुस्तक से लिया गया है, जिसके लेखक एक आर्यसमाजी देवी प्रसाद थे और जिसका प्रकाशन अंग्रेजों के राज के दौरान सन् 1907 में हुआ था।

यह स्पष्ट है कि हर जाति के सदस्यों की अलग-अलग राजनीतिक प्रतिबद्धताएं होती हैं। ऐसे में किसी एक-सा इतिहास या समान पहचान का निर्माण करना एक कठिन काम है। इस तथ्य के बावजूद यह स्पष्ट है कि मिथकों और जातिगत इतिहास की, दलित समुदायों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका है। ये समुदाय स्वयं को सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली बनाना चाहते हैं। इतिहास और मिथकों पर आधारित यह संघर्ष न केवल एक नई जनसंस्कृति का निर्माण कर रहा है, वरन् सत्ता संघर्ष और चुनावी राजनीति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

(साभार : फारवर्ड प्रेस)

हावड़ा खटिक समाज द्वारा नवनिर्वाचित सांसदों का भव्य अभिनंदन व सम्मान समारोह

हावड़ा, कोलकात्ता में गत् 14 सितंबर, 2014 को आयोजित हावड़ा खटिक समाज द्वारा नवनिर्वाचित सांसदों का भव्य अभिनंदन व सम्मान समारोह किया गया। इसमें उत्तर-पश्चिमी दिल्ली से सांसद डॉ. उदित राज, बुलंदशहर से सांसद डॉ. भोला सिंह और कौशांबी से श्री विनोद सोनकर का हावड़ा खटिक समाज के अध्यक्ष विवेक सोनकर एवं उनके पदाधिकारियों द्वारा पगड़ी पहनाकर एवं स्मृति चिंह्न, पुष्प गुच्छ व शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। सांसदों द्वारा समाज के हित व उत्थान के लिए प्रयासरत वरिष्ठ कार्यकताओं श्री मनोहर सोनकर (हावड़ा), श्री बंसी लाल सोनकर (खड़गपुर), श्री नंद किशोर सोनकर (हावड़ा), श्री दिलीप सोनकर (हावड़ा), श्री रतन सोनकर (वर्धमान), श्री पारस सोनकर (आसनसोल), श्री अशोक सोनकर (कोलकात्ता), श्री सागर माली (पोस्ता), श्री मानिक सोनकर (हातीबागान), श्री सोहन चौधरी (मानिकतल्ला), श्री कन्हैया सोनकर (सियालदह), श्री राजेश सोनकर (क्लाइ स्ट्रीट) व श्रीमती उज्जवला देवी सोनकर (सियालदह) को प्रशस्ति पत्र, स्मृति फलक, अंगवस्त्रम, पुष्प गुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया। सांसदों ने अपने व्यक्तव्य में यह जोर दिया कि छात्र-छात्राओं को शिक्षा, आर्थिक दशा, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना पर जोर देकर समाज को देश हित में कार्य करना चाहिए। समान अधिकार के लिए डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी का जो मूलमंत्र है ''शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो'' पर अमल करते हुए कठिन परिश्रम की जरूरत है।

इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय हावड़ा खटिक समाज के अध्यक्ष विवेक सोनकर ने अपने समाज के दर्जनों पदाधिकारियों और सैकड़ों कार्यकर्ताओं को दिया जो इस कार्यक्रम में दिन-रात मेहनत किए जिनमें प्रमुख उपाध्यक्ष- रतन सोनकर, शिव सोनकर, हजारी सोनकर, सावित्री सोनकर, महासचिव-श्याम सोनकर, सचिव-जुगनू सोनकर, संजय सोनकर, दीपक सोनकर, पप्पू सोनकर, कोषाध्यक्ष- विनय सोनकर, सदस्य -प्रकाश सोनकर, विकास सोनकर, राजकल्प सोनकर, संजय सोनकर, छोटे लाल सोनकर, आनंद सोनकर, बापी सोनकर, सन्नी सोनकर थे।

दिल्ली इकाई एवं एनसीआर द्वारा परिसंघ का एकदिवसीय सम्मेलन संपन्न

रविंद्र सिंह

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के दिल्ली इकाई एवं एनसीआर ने राष्ट्रीय अध्यक्ष, डॉ. उदित राज को लोक सभा सांसद बनने पर अंबेडकर भवन, नई दिल्ली में 20 सितंबर, 2014 को हार्दिक अभिनंदन एवं एकदिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया।

सम्मेलन एवं स्वागत समारोह को सफल बनाने के लिए डॉ. नाहर सिंह (अध्यक्ष, दिल्ली इकाई), रविंद्र सिंह (महासचिव), वीरसेन, पृथ्वीराज, गुलाब रब्बानी, संजय राज, अनिल, आदि ने आपस में तालमेल बनाते हुए पुरजोर मेहनत की।

परिसंघ के अध्यक्ष डॉ. उदित राज के अंबेडकर भवन में पहुंचते ही लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और लोग हाथों में फूलों की माला एवं गुलदस्ते लेकर उनका स्वागत किया। एक ही आवाज चारो तरफ से आने लगी कि हमारा नेता कैसा हो– डॉ. उदित राज जैसा हो, उदित राज आगे बढ़ो–हम तुम्हारे साथ हैं। इन नारों से पूरा हॉल गुंजायमान हो उठा। लोगों का अभिवादन करते हुए उदित राज मंच पर पहुंचे। मंच का संचालन कर रहे विनोद कुमार एवं डॉ. नाहर सिंह ने उदित राज का स्वागत किया और फिर कार्यक्रम की शुरुआत हुयी।

अपने स्वागत समारोह एवं एक दिवसीय सम्मेलन में आये हुए पदाधिकारियों का अभिवादन करते हुए डॉ. उदित राज ने अपने भाषण में परिसंघ के पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि निजी क्षेत्र एवं पदोन्नति में आरक्षण दलित भागीदारी के लिए परिसंघ की लड़ाई का मुख्य मुद्दा है। हम उम्मीद करते हैं कि आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी शीघ्र ही इन मुद्दों का समाधान निकालने में सफल रहेगें और दलित समाज को कांग्रेस के शासन–काल में उचित भागीदारी एवं न्याय नहीं मिला है, उसे देकर भारतीय समाज को मजबूत करेगें, जिससे देश खुशहाल एवं समृद्ध राष्ट्र बनेगा एवं डॉ0 अम्बेडकर के सपनों के भारत का निर्माण होगा।

डॉ. उदित राज ने आगे कहा कि परिसंघ ही पूरे देश में अकेला सामाजिक संगठन है जो हमेशा अधिकारों की लड़ाई लड़ता है और अपने संघर्ष के द्वारा भाजपा नेतृत्व वाली वाजपेयी के शासन काल में 81वां, 82वां एवं 85वां संवैधानिक संशोधन कराकर आरक्षण को बचाया। 2011 में जब इस देश में अन्ना हजारे की भ्रष्टाचार एवं जनलोकपाल की आंधी चल रही थी तो उस समय परिसंघ ही एक ऐसा संगठन था जिसने इंडिया गेट पर लाखों की रैली करके अन्ना हजारे को जन लोकपाल में आरक्षण के लिए ललकारा एवं अपना बहुजन लोकपाल बिल सरकार के समक्ष पेश किया एवं उसमें दलित, पिछड़े एवं अल्पसंख्यक की भागीदारी की बात कही। जब यह सरकार द्वारा बिल पास हुआ तो उसमें इन वर्गों को

प्रतिनिधित्व मिला। यह केवल परिसंघ की ही देन है। इसलिए परिसंघ को हमें पहले से 10 गुणा ज्यादा मजबूत बनाना है एवं सड़कों पर उतरकर राष्ट्रव्यापी आंदोलन तैयार करना है ताकि जो हमारी मुख्य मांगे हैं जैसे निजी क्षेत्र में आरक्षण, पदोन्नति में आरक्षण, आरक्षण कानून आदि को प्राप्त कर सकें। सफाई के पेशे, चिकित्सा, शिक्षा के क्षेत्र एवं चतुर्थ श्रेणी की नौकरियों में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त कराना है।

परिसंघ के राष्ट्रीय महासचिव विनोद कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि यदि परिसंघ दलित समाज के अधिकारों की लड़ाई सड़कों पर उतरकर लड़ता है तो निश्चित रूप से हम अपने अधिकारों को हासिल करने में कामयाब होंगे क्योंकि विषमतावादी सामाजिक व्यवस्था में सरकार किसी की भी हो, उनका दलित उत्थान एवं भागीदारी की तरफ चेतन अथवा अचेतन अवस्था में रहते हुए जाता ही नहीं है। पूर्व में दलित समाज ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के बताए हुए रास्तों पर चलकर अपने सामाजिक आंदोलनों के सहारे प्राप्त किए हैं। इस देश के शासकों को आज नहीं तो कल डॉ. अंबेडकर के सिद्धांत, समतामूलक समाज एवं भारतीय एकात्म समाज बनाने के लिए हजारों वर्षों से अपने मान–सम्मान एवं अधिकारों से वंचित दलित समाज को उनके अधिकार देने पड़ेंगे जिससे भारतीय समाज मजबूत होगा और भारत समृद्ध एवं महान राष्ट्र बन सकेगा।

विनोद कुमार एवं दिल्ली प्रदेश के पदाधिकारियों डॉ. नाहर सिंह, रविंद्र सिंह एवं अन्य वक्ताओं ने संयुक्त रूप से आहावन किया कि आगामी शीतकालीन सत्र में दिल्ली में होने वाली महारैली के लिए हमें अभी से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए, ताकि एक विशाल जनसंख्या के रूप में एकत्रित होकर अपनी मांगों को सरकार के समक्ष रख सकें।

रविंद्र सिंह ने सभी उपस्थित साथियों का अभिवादन किया और परिसंघ का गठन किन परिस्थितियों में किया एवं परिसंघ ने क्या–क्या सफलताएं पायी, इस बारे में विस्तार से बताया। जिसमें 10 सितंबर, 1998 को आईटीओ चौक, दिल्ली को दो घंटे तक जाम करना एवं 11 दिसंबर, 2000 की महारैली की सफलता के बारे में ध्यान दिलाया। और इसके कारण स्थानीय प्रशासन और भारत सरकार का ध्यान परिसंघ की ओर गया जिससे परसिंघ की आरक्षण विरोधी ज्ञापनों को वापस कराने में सफलता अर्जित हुआ।

कार्यक्रम के दौरान नेतराम ठगेला, जवाहर सिंह मीणा, वसंत कुमार, डॉ. प्रयासी, डॉ. अंजू काजल, पुष्पा जाटव, मास्टर इंद्रजीत, सत्यनारायण, रमेश कुमार, पृथ्वीराज, हंसराज, नीलम, सत्य प्रकाश जरावता, आर. सी. मथुरिया, ए. आर. कोली, रविंद्र कटारिया, दयाराम एवं दिल्ली व एनसीआर के पदाधिकारियों ने रैली को सफल बनाने के लिए अपने वक्तव्य पेश किए। सेमिनार में आए सभी पदाधिकारियों, विभिन्न विभागों के नेताओं, कर्मचारियों–अधिकारियों एवं दलित बुद्धिजीवियों का दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. नाहर सिंह ने दिल की गहराईयों से धन्यवाद किया।

Dalit students drink teacher's water, dismissed

Bikaner, 21st September, 2014 : Eleven children, all cousins belonging to a Scheduled Caste family, were removed from a government primary school in a village in Bikaner after two of them drank water from an earthen pot meant for an upper caste teacher.

The teacher, Mangal Singh, was arrested late on Friday night after the family lodged a police complaint against him.

"We arrested the teacher on Friday night and have seized records from the school," District Collector Aarti Dogra told The Hindu. "The Sub-Divisional Magistrate and the District Education Officer were immediately sent to the village and asked to submit a detailed report. We are awaiting their report before any further action is taken," Ms Dogra said.

The incident was reported from a government school in Tat village in Nokha tehsil, about 70 km away from the district headquarters. On September 1, two cousins – Virendra and Rakesh -- drank water from the earthen pot meant for Mangal Singh. This enraged the teacher, who reportedly humiliated the two students and even beat them up.

When their parents, Mangilal and Prakash Ram Meghwal, complained to the teacher the following day, Mangal Singh is said to have told them that the children had "defiled" the water by touching the pot.

However, Mangal Singh called the parents again on September 6 and apologised to them for his behaviour.

(Courtesy :The Hindu)

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:

Five years : Rs. 600/-

One year : Rs. 150/-

Degrees of bias

Anahita Mukherji

"Ch... ch...chamaar" was a taunt that followed Manish Kumar through the corridors of IIT Roorkee, a constant reminder of his caste tag. The young man's body was found on campus three and a half years ago, his death shrouded in mystery. The case bears an uncanny resemblance to that of Aniket Ambhore, a young dalit student who died under, what his parents call, "fishy" circumstances at IIT Bombay last week. They now talk of the barbs he faced in college for having taken admission under the SCST quota.

What pushed these promising young men over the edge? "A casteist comment here or there is not enough to break a student. People are not so fragile. What breaks them is the structural discrimination embedded in the system," says Anoop Kumar, a researcher who works on empowering dalit students in Maharashtra's Wardha district.

Kumar believes that dalit students who walk into elite institutions are instantly made to realize that this is not their space. A student of the Indian Institute of Science (IISc), Bangalore talks of the "mainstreaming of Brahmin culture" on a campus that has often been nick-named the Iyer-Iyengar Institute of Science. "Many faculty members wear strong caste symbols such as ash on their forehead. Students who wear similar caste marks are viewed more favourably," alleges the student.

An IISc student recalls how a classmate once spoke of how the Game Theory could be used to prove how good the caste system was. "Students often talk against reservations on campus, not caring if the person they are addressing belongs to the reserved category," says a non-dalit student who is routinely asked which caste he's from whenever he defends reservations.

Dalit faculty members are not spared either. Students have occasionally snickered about the talents of a professor whose name is Ambedkar, never mind that he is named after the architect of India's constitution.

At conferences, even noted dalit academician and scholar Kancha Ilaiah recalls moments when he's in a room with only Brahmin academicians, and finds them getting into a huddle, leaving him out.

The evidence isn't just anecdotal. A survey of freshmen at the IIT-Bombay campus earlier this year showed that 56% of reserved category students felt discriminated against. Some years ago, a report on the differential treatment of SCST students at the All India Institute of Medical Sciences prepared by a committee chaired by former University Grants Commission chairman Sukhadeo Thorat showed that 72% of such students said they faced discrimination, while 88% reported various forms of social isolation.

What is held against dalits the most is the 'merit' argument. But Kumar busts the merit myth in his report on caste discrimination at IIT-Delhi. Merit has been reduced to marks at the Joint Entrance Exam to IITs, which can supposedly to be cracked only by the brightest minds. But the "brightest minds" are invariably manufactured by a billion-dollar coaching industry, points out Kumar. "Better off students from the upper castes can afford coaching, while many dalit students crack the JEE on their own. And yet, because the cut-offs are lower for dalits, this feeds into the myth that they are not meritorious." According to the Thorat committee report on AIIMS, 76% of reserved category students said their papers were not examined properly. The percentage of those who felt discriminated against during practicals and viva was even higher at 84. As many as 76% said they were asked about their caste while 85% said they got less time with examiners than higher caste students.

Ilaiah believes that much of the caste discrimination on campuses has to do with the attitudes of faculty members towards reservations, which percolates down to a section of students.

Dalit students, many of whom come from non-English medium schools, often struggle to follow lectures in English, and this further feeds into the view that they are weak in academics. Remedial English at premier institutions is either absent or sorely inadequate, show reports. Many dalits who follow English are discriminated against on the basis of their accent, which gives away the fact that they haven't been speaking the language for long, says Santosh, a former IITian.

(Courtesy- Times of India)

Ambedkar Jayanti to commemorate 123rd birthday of Dr. Bheem Rao ji Ambedkar was celebrated in the HAL

Dr. Babasaheb B. R. Ambedkar Jayanti to commemorate 123rd birthday of Dr. Bheem Rao ji Ambedkar was celebrated in the Hindustan Aeroanutics Limited (HAL), Banglore on 06th Sept, 2014.

The programme was organized by HAL SC/ST Employees & Officers Association, Bangalore. The program was short and sweet. The attendees included invited guests, faculty, staff, students and the family members of the employees.

The invited speakers included Honorable Dr. Udit Raj, Ex. IRS, Member of Parliament (Lok Sabha) & President, All India Confederation of SC/ST Organizations who spoke about importance of the applicability of Babasaheb's philosophy in the current socio-economy context. Indian Industry and Economy is experiencing fastest growth through Private-Public Partnership and FDIs. Privatization in Railways, Defense and infrastructure space are adding fuel to the job securities and promotions for the backward class employees. It is the high time to reconstruct and fight for the rights of our own dalits unitedly across India. He invited Karnataka team to stand with his federation in Delhi on coming Nov'2014 for National Level representation. Delhi had been epicenter for all policy level changes. He also emphasized the requirement for backward class reservation in the private sector. He announced that state level federation team would be organizing 2 Days seminar on Backward class issues and approaches on 19th of Oct'2014 at Bangalore. Promotion Quota Bill to provide reservations in promotions for SCs, STs.

A Constitution amendment bill providing for quota for SCs and STs in government job promotions was passed by Rajya Sabha on 17th Dec'2012 with an overwhelming vote of 206 in the 245-member House but Lok Sabha on 20th Dec'2012 failed to pass a contentious bill that seeks to provide reservation to schedule caste and schedule tribe in government job promotions.

Promotion quota bill proposes to do:

1. The Constitution (One hundred and seventeenth) Amendment Bill, introduced in Rajya Sabha September 4, seeks to amend at least four articles of the constitution to enable the government to provide quotas in promotions for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes who constituted roughly 25 percent of the country's 1.2 billion population.

2. It seeks to remove the term 'inadequate representation' mentioned in Article 16(4A) to justify quotas in promotions and appointments.

3. It also delinks the term 'efficiency of administration' from the claims of SC and ST for jobs and promotions, mentioned in Article 335.

4. Article 335 of the Constitution says that claims of the SC and ST have to be balanced with maintaining efficiency in administration. The bill states the amendment will override the provision of Article 355.

5. The Bill provides that all the Scheduled Castes and Scheduled Tribes notified in the constitution shall be deemed to be backward.

Dr Ambedkar on reservation has categorically stated "Reservation is neither a policy matter, a political gimmick nor a matter of charity. It is a constitutional obligation .

Every social history in the society has background. Reservation has its own background when people into High and Low on the basis of their birth and not on the basis of merit.

The fundamental reason behind caste based reservations is helping for needy poor people who are Socially, Economically backward people who are being suppressed, exploited by most selfish, cruel upper class society or businessmen by their Secret/ Hidden Reservation Policy.

Now many qualified brothers and sisters from backward classes are struggling to get jobs in private organization, but the PSU's privatizations are on fast track. Later Govt. or new joint management forgets their own backward friends, colleague and juniors. Companies ownership/manpower only changed from Govt. and Govt. Employees, the rest of the things, the contracts, lands, bank loans, mines, Infrastructure, subsidies etc. resources are all govt. provided, means we all people provided but maximum jobs they are giving to their own people by secret/hidden reservation Policy.

Now this is the time, very urgently on priority we have to fight for Reservation Policy in private sector & every sector for bringing our own backward friends & family to the mainstream.

2. Dr. Shivakumar, Post Doctoral Fellow, Kuvempu Institute of Kannada Studies from Bangalore. He spoke on the life history of Dr. B R Ambedkar and the hurdles he faced from his schooling to his death in the year 1956. He also spoke of the persistence of caste based discrimination and the incidents of atrocities on dalits because of the caste ridden Hindu society.

Guests list also included Mr. Tyagi, Chairman, Hindustan Aeronautics Limited. Dr. R Raju, IFS, Managing Director, Karnataka Handloom Development Corporation Limited. Sri Byrathi Basavaraj, MLA, KR Puram Constituency. B N Shivalinga, President.

Dr. Udit Raj was awarded with Dr. B R Ambedkar Award – 2014 for his excellent work for Dalits across India. He has been instrumental in mobilizing, representing issues prevailing to Backward classes at Central Govt. level.

Mahatma Jyotiba Phule Award -2014 to Sri V M Chamola, Dirctor (HRD) HAL. The programme was well attended and was well appreciated.

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 17 ● Issue 21 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 30 September, 2014

Participation in Governance guaranteed by BJP- Udit Raj

K. Ramankutty

Dr.Udit Raj, MP declared that unlike the UPA and its Government, Bhartiya Janta Party leadership has guaranteed participation of Dalit Adivasi Janata in the Governance of the Country. The Prime Minister's approach towards the problems of the nation could well be seen in his declaration about the basic issues confronting the nation. He also explained the historic service of the All India Confederation of SC/ST organisations in safeguarding the constitutional guarantees. The constitutional amendments are the outcome of confederation's continued struggle. Dr. Udit Raj also mentioned the largest historic gathering and rally organised by the Confederation in 2000 at New Delhi which has been accepted even by historians as the largest since independence. The confederation is the largest organisation in India. He appealed to the workers and leaders to make the confederation more and more militant as we have to mould the ruling class to sweep out inequalities prevalent in society. He was speaking at the civic reception organised in his honor at the Gandhi Park, Trivandrum, Kerala on 17th September 2014. The civic reception was inaugurated by Sri. V. Muraleedharan, Kerala State President of the Bhartiya Janta Party who made in clear terms that the Bhartiya Janta Party is committed to participation of the SC/STs in the governance. He also assured that social justice will be facilitated and made good. Sri. K. Ramankutty Confederation Kerala President and National leader who presided over the meeting, cautioned the ruling and opposition parties for canvasing majority Dalit and Adivasi Communities by way of Vote banks. He complained that distribution of states fortunes among majority Communities alone will create imbalance in the progress among the Dalits and Adivasis. There shall be no discrimination in the distribution of wealth of the nation he added. He also strongly criticized the UDF Government in having stopped educational benefits to SC/ST Students who undergo job oriented Courses in different private educational institutions. He appealed to the Chief Minister of Kerala, Shri Oommen Chandy to withdraw the case in this regard filed in Supreme Court by Kerala Government with immediate effect.

Dr. B. Ashok, IAS, Vice Chancellor, Kerala Veterinary University delivered the Key-note address. He urged the Government to have a decision to insist upon drawing and disbursing officers to distribute educational benefits to the SC/ST students on the first working day of the month and certify to that effect in their own salary bills.

The Office bearers of the Hindustan Latex Democratic Employees (SC/ST) Union presented "Aranmula Mirror" which is a rare item of presentation to Dr. Udit Raj along with Ponnada. Shri D. Rajendran, General Secretary, Latex, Sreeraman Koyyon, President, Adivasi Dalith Maha Sabha and Veteran Fighter for land, Sri Karuppaih, Tamilnadu Confederation General Secretary, Shri S. Murukan, ISRO SC/ST Employees national leader, Shri N. Sreenivasan, President, Airport SC/ST Employees Welfare Association Shri K. P. Krishnan, President, SBI SC/ST Employees Welfare Association, Shri Appukuttan Kurichi, Kerala State Employees Welfare Association, Shri K. S. Sivarajan, President, Sivagiri Action Council, Shri Ambalathara Sreeranganath, State Vice President, Kerala Pulayan Maha Sabha, Shri K. K. Bhaskaran, President, Sambava Maha Sabha Shri Vennikkulam Madhavan, Patron, Kerala Sambava Society, Shri C. Ramesam, President Travancore Ayyanavar Mahajana Sanghom, Shri V. Mani, Vice President, Vannar Service Society Shri A. Thulaseedharan, President Paravar Service Society, Shri C.K.Chandran, Former President, Vettuva Maha Sabha, Shri Mohan Thriveni, President Adivasi Maha Sabha, Shri E.K. Chellappan, President Akhila Kerala Sidhanar Service Society, Shri M. V. Sudhakaran, General Secretary, Thandan Service Association received Dr. Udit Raj with Ponnadas and bouquets. Shri T. R. Balakrishnan, Manager, State Bank of Travancore and State Secretary, Kerala Confederation welcomed the gathering and Shri Subhash Pulikkal, District President, Kollam expressed vote of thanks. The venue was Gandhi Park attended by a large mass.

Dr. Udit Raj was received at the Trivandrum airport by Shri K. Ramankutty, Kerala President with bouquets and Ponnada and various leaders accompanying him were also offered warm reception. Later he was taken in an entourage to the Government Guest House, Thycaud, Trivandrum where important personalities of all walks of life visited him and paid their respects. On the whole the civic reception organised in honour of Dr. Udit Raj, Hon'ble Member of Parliament was remarkable in all respects.

Massive Rally of the Confederation

At the initiative of the National President of All India Confederation of SC/ST Organisations, Dr. Udit Raj a massive rally will be held at the Ramlila Maidan, New Delhi to coinside with the winter Parliamentray Session. The Rally will demand for Bhagidari, reservation in Promotions and to ban contractual labor system. To achieve these rights, You are called upon to hold lunch time demonstrations the tehsil, district and state levels. The formal date of the rally will be announced shortly.

Vinod Kumar, National Gen. Secretary,
M.- 9871237186, Email : – dr.uditraj@gmail.com

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn